ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 220-222
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

मध्यकालीन मुस्लिम शिक्षा व्यवस्था : एक अध्ययन

डॉ0 गौरव कुमार सिंह
असि0 प्रोफेसर– इतिहास विभाग, राजकीय महाविद्यालय, मौंट–मथुरा (उ0प्र0) भारत

Received-08.06.2023, Revised-14.06.2023, Accepted-19.06.2023 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांशः ***भारत में जब मुस्लिम राज्य की स्थापना हुई, तब वे अपने साथ कई नई व्यवस्थाऐं लेकर आए। इनमें से एक शिक्षा व्यवस्था भी थी। सल्तनत की स्थापना के साथ ही भारत में मकतब और मदरसों की स्थापना हुई। जिनमें छात्र प्राथमिक और उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकते थे। कुछ मदरसों में छात्रावास भी होते थे, जिनमें छात्रों को गुरूओं के पास रहने और सीखने का अधिक समय मिलता था। सल्तनत की स्थापना से लेकर अंग्रेजी शासन की स्थापना से पूर्व मध्यकालीन शिक्षा व्यवस्था में अनेक परिवर्तन हुए।***

कुंजीभूत शब्द– मकतब, मदरसा, सल्तनत, छात्रावास, दण्ड, पुरस्कार, राजकीय संरक्षण, राजनैतिक, जागीर, प्राथमिक शिक्षा।

भारत में दिल्ली सल्तनत की स्थापना और अंग्रेजी शासन से पूर्व के काल को मध्यकाल की संज्ञा दी जाती है। दिल्ली सल्तनत की स्थापना के साथ ही मुस्लिम आक्रमणकारी अपने साथ नई सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक व्यवस्थाऐं लाऐ। मुस्लिम शासक युद्ध और साम्राज्य के विस्तार में लगे रहने के बावजूद उन्होंने शिक्षा के विकास पर प्रबल ध्यान दिया। दिल्ली सल्तनत की समाप्ति के बाद जब भारत में मुगल वंश की स्थापना हुई तो प्रारम्भिक मुगल षासक बाबर और हुमायूँ समयाभाव के कारण शिक्षा के विकास पर कम ध्यान दे पाऐं लेकिन अकबर ने शिक्षा के विकास के लिए महत्वपूर्ण कदम उठायें जो कि उसके बाद के मध्यकाल के लिए मानदण्ड बने रहे।

शिक्षा के उददेश्य – मध्यकालीन शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य थे :–

1.मध्यकालीन शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य ज्ञान को बढ़ावा देना था। प्रत्येक मुसलमान के लिए ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य था।[1]

2.बच्चों में अच्छे आचरण का विकास करना।[2]

3.शिक्षा का एक अन्य उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से इस्लाम धर्म का प्रचार–प्रसार करनाथा।[3]

4.भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए भी शिक्षा प्राप्त की जाती थी।[4]

5.मध्यकालीन शिक्षा राजनीतिक उद्देश्यों और स्वार्थों से प्रेरित थी।[5] मुस्लिम शासक भारत में अपनी शासन व्यवस्था और संस्कृति को बढ़ावा देना चाहते थे। उन्होंने इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए शिक्षा को बढ़ावा दिया।

मध्यकालीन शिक्षा की प्रमुख विशेषताऐं– मध्यकालीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था में हम अग्रलिखित विशेषताऐं पाते हैं –

1. राज्य प्रदत्त संरक्षण– मध्यकालीन शिक्षा को राज्य का संरक्षण प्रदान था। मध्यकालीन शासक शिक्षा में गहरी रूचि रखते थे इसीलिए इन शासकों द्वारा राज्य के खर्चे पर मकतब, मदरसों तथा पुस्तकालयों की स्थापना की गई थी।

2. इस्लामी संस्कृति का प्रसार– मध्यकालीन शिक्षा द्वारा इस्लाम के सिद्धान्तों, रीति–रिवाज, परम्पराओं तथा कानूनों को भारत में फैलाया गया। डॉ0 युसुफ हुसैन के अनुसार, मध्यकाल में सोचने का दृष्टिकोण धार्मिक था। राजनीति, दर्शन तथा शिक्षा को धर्म के अधीन रखा गया था तथा उन्हें धार्मिक भावनाओं के अनुकूल लाया गया। व्यक्ति के सोचने और बोलने तक का दृष्टिकोण धार्मिक था।[6]

3. मकतब (प्रारम्भिक शिक्षा)– प्रारम्भिक शिक्षा के लिए मकतब की व्यवस्था थी जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को वर्णमाला और धार्मिक प्रार्थना का ज्ञान कराना था।[7] अधिकांश मकतब मस्जिदों से जुड़े रहते थे,जहाँ बच्चों को पढ़ाया जाता था। जब बच्चा चार साल, चार माह, चार दिन का हो जाता था तब उसे शिक्षा देने की रस्म पूरी की जाती थी जिसे 'बिस्मिल्लाह' कहा जाता था। मदरसों के अतिरिक्त खानकाहों और दरगाहों में भी बच्चों को प्रारम्भिक शिक्षा दी जाती थी। जो चढ़ावा यहाँ आता था उसी से यहाँ का खर्चा चलाता था।[8]

4. मदरसा (उच्च शिक्षा)– जहाँ छात्रों को उच्च शिक्षा प्रदान की जाती थी। उन्हें 'मदरसा' कहा जाता था। मकतब की शिक्षा पूर्ण करने के बाद मदरसा में प्रवेश मिलता था। यहाँ विद्यार्थियों को भिन्न भिन्न शिक्षक अपने अपने विषय का व्याख्यान देते थे। मदरसों में धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष दोनों प्रकार की शिक्षा दी जाती थी। जहां धार्मिक शिक्षा के अंतर्गत कुरान पर टीका, इस्लामी कानून एवं मुहम्मद साहब की परंपराओं का अध्ययन किया जाता था वहीं धर्म निरपेक्ष शिक्षा के अन्तर्गत व्याकरण, साहित्य, इलाही (वे सभी बातें जिसमें सदाचार और ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करने के साधन), रियाजी (संख्या से सम्बधित) तिबई (शरीर विज्ञान),गणित, भूगोल, ज्योतिष, इतिहास, दर्शनशास्त्र इत्यादि विषयों ज्ञान प्राप्त किया जाता था।[9] अकबर का सोचना था कि यदि हिन्दुओं को केवल इस्लामी शिक्षा दी जाएगी तो यह साम्राज्य के लिए खतरा हो सकती है।[10] अतः हिन्दुओं को शिक्षित करने के लिए ऐसे मदरसों की स्थापना की गई जहाँ फारसी भाषा में हिन्दू धर्म, दर्शन और साहित्य की शिक्षा दी जाती थी।[11] इन मदरसों में फारसी सीखने वाले हिन्दुओं को यह लाभ हुआ कि उन्हें राज्य के सरकारी पदों पर नौकरियाँ मिलने लगीं जैसे कि– टोडरमल आदि।

5. पाठ्यक्रम– शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति में पाठ्यक्रम की अहम् भूमिका होती है। इसीलिए परम्परागत पाठ्यक्रम में अकबर द्वारा परिवर्तन किए गये। अकबर ने जीवन की आवश्यकताओं के अनुकूल पाठ्यक्रम को व्यावहारिक बनाया।[12] मध्यकालीन शिक्षा के पाठ्यक्रम के बारे में बृहद जानकारी हमें मुल्ला निजामुद्दीन से मिलती है जिसने पाठ्यक्रम के अन्तर्गत आने वाले विषयों तथा इन विषयों में पढ़ाई जाने वाली अलग–अलग पुस्तकों के बारे में भी बताया है।[13]

– बलागत (साहित्यशास्त्र)– इस विषय की प्रमुख पुस्तकों में मुख्तसर मानी, मुतव्वल से मानी कुलतू तक ।

– नह (व्याकरण एवं वाक्य रचना)– इस विषय की प्रमुख पुस्तकों में नहमीर, काफिया, शरह–ए–माता–आमिल पुस्तकें शामिल हैं।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

– मन्तिक (तर्कशास्त्र)– तर्कशास्त्र विषय की प्रमुख पुस्तकों में कुबरा,सुगरा, शरह–ए–तहजीब आदि पुस्तकें शामिल हैं।
– सर्फ (विभक्तिकरण तथा पदों के रूप में)– इस विषय की प्रमुख पुस्तकों में सर्फ–ए–मीर, मिजान, पंजगंज, जुब्दा, शाफिया, फुसूल–ए–अकबरी इत्यादि पुस्तकें शामिल हैं।
– फिक (न्यायशास्त्र)– इस विषय की प्रमुख पुस्तकें शरहे वकाया अव्वलीन, हिदाया आखिरीन शामिल थीं।
– रियाजी (गणित)– इस विषय की प्रमुख पुस्तकों में रिसाल–ए–कौशाजिया, खुलासत–उल–हिसाब, तशरीह–उल–अफलाक इत्यादि पुस्तकें शामिल थीं।
– कलाम (तर्क विद्या)– इस विषय की मान्य पुस्तकों में षरहे मवाकिफ, शरहे अकायद–ए–नसफी, शरहे अकायद–ए– जलाली मीर जाहिद इत्यादि पुस्तकें शामिल हैं।
– तफसीर (कुरान टीका)– इस विषय की प्रमुख पुस्तकों में जलालैन, बैजाबी इत्यादि शामिल हैं।
– हदीस (परम्परायें) – इस विषय की प्रमुख पुस्तक मिश्कात–अल–मसाबिह थी।
– हिकमत (दर्शन)– इस विषय की प्रमुख पुस्तकों में सद्रा, मैबाजी तथा शम्स ए बजीगा शामिल थी
– उसूल–ए–फिक (न्याय शास्त्र के सिद्धान्त) – इस विषय की प्रमुख पुस्तकों में मुसल्लिमतस सुबूत, नुरूल अनवार, तौदीह तहलीह इत्यादि शामिल थीं।

ऐसा माना जाता है कि बाद के काल में इन 11 विषयों के अलावा चार विषय और बढ़ गए थे। इस प्रकार कुल विषयों की संख्या 15 हो गयी थी। ये चार विषय अरब (साहित्य), फरायज (कर्तव्य), मनाजरा (वाद विवाद), उसूले हदीस (हदीस के सिद्धान्त) थे।[14] इस प्रकार पाठ्यक्रम में अनेक विषय शामिल थे।

6. दण्ड एवं पुरस्कार– योग्य एवं तेज बुद्धि वाले विद्यार्थियों को पुरस्कर देकर प्रोत्साहित किया जाता था। उन्हें सश समाप्त होने के समय 'सनद' और 'तमगा' दिया जाता था।[15] मदरसों में शिक्षा पूर्ण कर चुकें कुशल विद्यार्थियों को राज्य द्वारा प्रशासन के उच्च पदों पर नियुक्त किया जाता था। इन नियुक्तियों को राज्य द्वारा गठित समिति द्वारा किया जाता था।[16] जिन विद्यार्थियों का समिति द्वारा चयन हो जाता था उन विद्यार्थियों के सिर पर 'अमामा' पगडी बाँधकार सम्मानित किया जाता था।[17]

7. महिला शिक्षा– मुस्लिम महिलाओं को शिक्षा के क्षेत्र में पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त नहीं थे वे पुरूषों की तरह प्रारम्भिक और उच्च शिक्षा के लिए मकतब और मदरसों में शिक्षा लेने नहीं जा सकती थी। इसलिए शिक्षा के क्षेत्र में कोई विशेष सुविधा न होने के कारण महिलाऐं पिछड़ी रहीं।[18] मुगल काल में महिलाओं को शिक्षा प्रदान करने के लिए कुछ शिक्षण संस्थान खोले गए। राजपरिवार एवं उच्च वर्ग की महिलाओं को उनके परिवार में ही पढ़ने की व्यवस्था की जाती थी।[19] मध्यकालीन प्रमुख शिक्षित महिलाओं में रजिया, गुलबदन बेगम, नूरजहां, मुमताजमहल, जहाँआरा, रोशनआरा, जेबुन्निसा आदि प्रमुख है।

8. छात्रावास– मकतब में प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए छात्रावास की व्यवस्था नहीं थी। वे अपने घर से ही जाकर शिक्षा प्राप्त करते थे। छात्रावास का खर्च राज्य और धनी वर्ग दोनों के द्वारा किया जाता था। कभी–कभी सरकार द्वारा छात्रावास खर्चा वहन करने के लिए जमींदारी दे दी जाती थी।[20] फिरोजशाह तुगलक ने विशाल मदरसों का निर्माण करवाया था जिनमें छात्रावास की उचित व्यवस्था थी जिसमें सैकडों विद्यार्थी एक साथ शिक्षा प्राप्त कर सकते थे।[21] इब्नबतूता ने अपनी पुस्तक रेहला में एक मदरसे के बारे में लिखा है कि उस मदरसे में 300 कमरे थे। एक अन्य मदरसे के बारे में इब्नबतूता कहता है कि वहाँ विद्यार्थियों को प्रतिदिन मुर्ग, चपातियाँ, खोर्मा, मिठाई, पोलाव खाने में दिया जाता था। इब्नबतूता कहता है कि यात्रा के दौरान में इन्हीं छात्रावास में रूकता था।[22]

9. गुरू शिष्य का सम्बंध– हिन्दू शिक्षा पद्धति की भाँति ही इस्लामी शिक्षा पद्धति में भी गुरू का विशेष महत्व था। गुरू और शिष्य के सम्बंध पिता–पुत्र के होते थे। गुरू अपने शिष्यों को बड़े प्रेम के साथ पढ़ाते थे यदि कोई विद्यार्थी उपस्थित नहीं रहता था तब गुरू उसके आने पर बड़ी नरमी के साथ उससे न आने का कारण पूछते थे। सुल्तान भी अपने गुरूओं का बड़ा सम्मान करते थे। बरनी लिखता है कि मुहम्मद बिन तुगलक अपने गुरू कुतुलु खाँ का बहुत सम्मान करता था। गुरूओं के सम्मान में पुराने विद्यार्थी भी समय समय पर अपने गुरूओं को भेंट भेजते थें।[23] जिन मदरसों में छात्रावास की सुविधा थी वहाँ गुरू–शिष्य एक ही साथ रहते थे वहाँ विद्यार्थियों को गुरू के साथ रहने का लाभ मिलता था।[24] गुरूओं को अनुशासन बनाए रखना प्रमुख चुनौती होती थी।

राजकीय संरक्षण में शिक्षा का विकास– ताज–उल–मासिर का लेखक हसन निजाती लिखता है कि अजमेर में मुहम्मद गोरी ने कई मदरसों की स्थापना कराई थी। कुतुबुद्दीन ऐबक स्वयं एक विद्धान व्यक्ति था लेकिन उसके पास समय कम होने के कारण शिक्षा पर कोई विशेष ध्यान नहीं दे पाया। जब इल्तुमिश दिल्ली सल्तनत की गद्दी पर बैठा तो उसने शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। उसने दिल्ली और बदायूँ में मदरसे की स्थापना की तथा दिल्ली के मदरसे का नाम मोहम्मद गौरी के नाम पर "मदरसा ए मुइज्जी" रखा।[25] नासिरुद्दीन महमूद के समय दिल्ली और जालंधर में मदरसे की स्थापना की गई। मिनहाजुद्दीन सिराज को दिल्ली के मदरसे का प्राचार्य नियुक्त किया गया।[26] यह बात उल्लेखनीय है कि इस समय के मदरसों से उच्च वर्ग को ही लाभ प्राप्त हुआ जबकि निम्न वर्ग शिक्षा में होने वाले लाभों से वंचित ही रहा।

बलबन ने सुल्तान बनने के पश्चात् शिक्षा को प्रोत्साहित किया तथा उलेमाओं तथा विद्धानों को संरक्षण प्रदान किया। बलबन के काल के प्रमुख विद्धान शमसुद्दीन ख्वारिज्मी, कमालुद्दीन जाहिद, बुरहानुद्दीन बज्जात इत्यादि थे अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली में हौज– ए –खास के निकट एक मदरसे का निर्माण कराया।[27] मुहम्मद–बिन–तुगलक ने 1346 ई0 में दिल्ली में एक मदरसे की स्थापना

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

की। फिरोजशाह तुगलक ने पहली बार व्यावसायिक शिक्षा प्रारम्भ कराई। सैयद सुल्तानों के समय बदायूँ एक प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्र था। सिकन्दर लोदी ने शिक्षा के प्रसार के लिए अनेक प्रयास किए। उसके समय आगरा शिक्षा का प्रमुख बना।[28]

बाबर स्वयं एक बड़ा विद्वान था लेकिन समय के अभाव के कारण वह शिक्षा के क्षेत्र में वह कुछ अधिक न कर सका। हुमायूँ ने दिल्ली में एक मदरसे की स्थापना की तथा शेख हुसैन को उसका प्राचार्य नियुक्त किया उसने दिल्ली में एक पुस्तकालय की स्थापना की।[29] अकबर स्वयं पढ़ा लिखा नहीं था फिर भी अकबर ने शिक्षा के प्रसार के लिए कार्य किए। अकबर के समय की शिक्षा नीति को विद्वान फाथुल्ला शिराजी ने काफी प्रभावित किया। अकबर ने तकनीकि शिक्षा पर भी पर्याप्त ध्यान दिय।[30]

अकबर के उत्तराधिकारियों के काल में भी शिक्षा प्रगति हुई। जहाँगीर के काल में आगरा शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था। शाहजहाँ ने दिल्ली की जामा मस्जिद के निकट एक मदरसे की स्थापना की। शाहजहाँ की पुत्री जहाँआरा ने भी आगरा की जामा मस्जिद के निकट एक मदरसे की स्थापना की। औरंगजेब उच्चकोटि का शिक्षित व्यक्ति था। उसने अनेक मदरसों की स्थापना की। मदरसा–ए–रहीमियाँ की स्थापना उसी के काल में हुई। इस मदरसों का नाम शाह वली उल्लाह के पिता शाह अब्दुल रहीम के नाम पर हुआ। औरंगजेब ने प्रान्तीय दीवानों को यह फरमान जारी किया था कि वे सभी छात्रों को राजकोष से आर्थिक सहायता प्रदान करें।[31]

इस प्रकार हमें मध्यकालीन मुस्लिम शिक्षा व्यवस्था जो कि दिल्ली सल्तनत की स्थापना से प्रारम्भ हुई थी। मुगल काल में अनेक परिवर्तनों को अपने अन्दर समाहित करती रही। जिसमें विषयों की संख्या में बढ़ोत्तरी, पाठ्यक्रम में बदलाव इत्यादि दिखाई देते है। मध्यकालीन मुस्लिम शिक्षा व्यवस्था पर मध्यकालीन राज्य के स्वरूप का अत्याधिक प्रभाव था।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. रावत, पी0एल0: हिस्ट्री ऑफ इण्डियन एजुकेशन, आगरा 1956 पृ0 84.
2. वही।
3. वही।
4. डॉ0 चौबे एवं डॉ0 श्रीवास्तव : मध्ययुगीन भारतीय समाज एवं संस्कृति लखनऊ, 2005, पृ0 495.
5. वही, पृ0 496.
6. हुसेन, युसुफ : ग्लिम्पसेस ऑफ मेडियवल इण्डियन कल्चर, बम्बई, 1962, पृ0 71.
7. जफर, एस. एम. कल्चरल ऐस्पेक्ट्स पृ0 76.
8. डॉ0 चौबे एवं डॉ0 श्रीवास्तव, वही पृ0 509.
9. डॉ0 चौबे एवं डॉ0 श्रीवास्तव वही पृ0 510.
10. पी0 एल0 रावतः वही पृ0 9.4
11. वही, पृ0 95.
12. वही, पृ0 95.
13. डॉ0 अहमद, लईक : मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, इलाहाबाद, 2010, पृ0 54.
14. वही पृ0 55.
15. जफर, एम0एस0 : वही पृ0 80.
16. वही।
17. वही।
18. डॉ0 चौबे एवं डॉ0 श्रीवास्तवः वही, पृ0 517.
19. वही।
20. वही।
21. एस.एम.जाफर, एजुकेशन, पृ0 51.
22. पी0 एल0 रावत, वही, पृ0 105.
23. डॉ0 चौबे एंव डॉ0 श्रीवास्तवः वही, पृ0 518.
24. वही, पृ0 519.
25. डॉ0 अहमद, लईकः वही, पृ0 50.
26. डॉ0 चौबे एवं डॉ0 श्रीवास्तव : वही, पृ0 497.
27. डॉ0 अहमद लईक : वही, पृ0 50.
28. डॉ0 चौबे एवं डॉ0 श्रीवास्तव वही पृ0 500.
29. पी0 एल0 रावतः वही, पृ0 88.
30. डॉ0 चौबे एंव डॉ0 श्रीवास्तवः वही, पृ0 503.
31. डॉ0 अहमद लईक : वही, पृ0 54.

*****